# जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ

## (निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै

* * * * * * * * * * * * *
* * * * * * * * * * * * *

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पंज तत्त मिले वडयाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, त्रैगुण माया लेखे लाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन वासना दए गवाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सति सतिवादी होए ना कोई लड़ाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बुद्ध बिबेक दए बणाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नौं दवारे पार कराईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, कूड़ी क्रिया जूझ झूठ हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुखमन टेडी बंक पार लँघाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द अनादी धुन दए उपजाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अमृत रस जाम प्याईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म सेजा पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुरती शब्दी मिल के दसम दवारी इक्को वज्जे वधाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मेहरवान महिबूब दसम दवारी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उच्च अरूज अगम्म अथाह आपणा खेल वखाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुन समाध रहण ना पाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, थिर घर दवारा बिन अक्खां दए जणाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, साचे कँवल चरन दए सरनाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बैकुण्ठ निवासी साचे धाम दए टिकाईआ। जो जन सिमरे

प्रभ का नाउँ, जोती जोत जोत मिलाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी आपणी रासी रस्ते आपणे विच्चों पार कराईआ।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बख्शे चरन ध्यान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मेटे माण अभिमान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाम भंडारा देवे दान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द सुणाए बिन रसना कान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, भाग लगाए काया माटी सच मकान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर ठाकर स्वामी मिले आण। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, दीपक जोत जगदा रहे महान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सच भूमिका मिले सच असथान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, एथ्थे ओथ्थे मेला मिल्या रहे श्री भगवान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति पुरख निरञ्जण धुर दा काहन।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, चिन्ता ग़म रहे ना हरख़ सोग़। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, माटी चम्म अंदरों बाहर कढ्ढे ममता रोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाम निधाना चुगाए साची चोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, चरन प्रीती दस्से अगम्मी जोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म सेज सुहञ्जणी जणाए इक्को भोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, वज्जे वधाई साचे काया कोट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द अगम्मी लग्गे चोट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन वासना रहे ना खोट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर साचे मिले धुर दी जोत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अन्तकाल कल पोह ना सके मौत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जुग चौकड़ी कदे ना जावे औंत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सचखण्ड दवारे बिन डण्डे पौड़ी जाए पहुंच। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पुरख अकाल दीन दिआन परवरदिवार हंढ्ढाए इक्को खौंत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मन्दर आप सुहाईआ।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिटे दुःख रोग सन्ताप। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, कोट जन्म दे उतरे पाप। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले वड्डिआई लोकमात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाता तुट्टे कूड़ सज्जण साक। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बन्द कवाड़ी खुल्ले ताक। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाम निधान सुणाए सच्ची गाथ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, वस्त अमोलक मिले दात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मेटे रैण अन्धेरी रात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पुरख अबिनाशी पुच्छे बात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, दुरमत मैल देवे काढ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, साचा वणज कराए आपणे हाट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, झगड़ा मुकाए तीर्थ ताट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जन्म कर्म दी पूरी होवे वाट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्दी शब्द सुणाए बात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नज़री आवे साख्यात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, सदा सुहेला देवे आपणा साथ। (१५ सावण श स २)

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जगत सन्ताप ना विआपे दुःख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जन्म कर्म दी तृष्ना मिटे भुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उजल होवे मात मुख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले वड्डिआई जनणी कुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, गुर शब्दी धार बणाए आपणा सुत्त। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आवण जावण पैंडा जाए मुक्क। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म मिल के होए खुश। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जगत वासना विकार विच्चों हो जाए चुप्प। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, होए प्रकाश अन्धेरे घुप्प। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उल्टा गरभ ना होवे रुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आवे जावे सदा जामा पाए मनुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, गलों टुट्टे जम की फासी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन ममता ना रहे उदासी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्दी गुरू बणे धुर दा साथी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुरत सवाणी मन्ने अंदरों आखी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बन्द किवाड़ी खुल्ली रहे ताकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अमृत जाम प्याए धुर दा साकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, भाग लग्गे तन माटी ख़ाकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मनूआं मन रहे ना आकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, प्रेम प्रीती अन्तर आत्म परमात्म इक्को जाणे जाती। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर हरि मन्दर मिले कमलापाती। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अमृत बूंद देवे स्वांती। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मंज़ल औखी चाढ़े घाटी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बंक दवारा मिले दरगाह साची। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले जोत जोत अबिनाशी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा लहणा चुकाए जन्म जन्म जन्म दा बाकी। (१५ सावण श सं २ कर्म सिँघ)

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नाता तुट्टे जगत कूड़ो कूड़। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, चतर सुघड़ बणे मूर्ख मूढ़। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, काया चोली चढ़े रंग गूड़। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शब्द अनादी उपजे अन्तर तूर। जो जन सिमरे

प्रभ का नाउँ, निर्मल जोती प्रगट होवे नूर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आसा मनसा प्रभ करे पूर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अबिनाशी दरस वखाए हाज़र हज़ूर। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड्डिआई सर्ब कला भरपूर।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण मुके पन्ध। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जन्म कर्म धर्म आसा मनसा पूरी होवे मंग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लक्ख चुरासी जम की फासी कट्टे फंद। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, तूं मेरा मैं तेरा आत्म ढोला सुणे छन्द। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे गंद। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सच प्रकाश निर्मल जोत होवे चन्द। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, दीन दयाल होवे बख्शंद। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साहिब सूरा सर्बंग।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले वड्डिआई लोकमात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पुरख अबिनाशी सच प्रीती चरन बख्शे दात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बिन रसना जेहवा अन्तर अन्तर उपजे साची गाथ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अन्तर मिटे अन्धेरी रात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर स्वामी ठाकर मिले आप। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कोट जन्म दे उतरन पाप। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस देवे स्वच्छ सरूपी साख्यात। (१५ सावण श सं २ उत्तम सिँघ)

* * * * * * * * * * * * *
* * * * * * * * * * * * *

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण रहण ना पाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पत्तित पावन दए वडयाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लक्ख चुरासी जम की फासी फंद कटाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, भेव खुल्लाए मण्डल रासी, पड़दा उहला आप उठाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, वस्त अमोलक देवे नाम दाती, अतोट अतुट्ट आप वरताईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अठ्ठे पहर रहे परभाती, संध्धया रंग ना कोई वखाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, तूं मेरा मैं तेरा इक्को दस्से जाती, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप चुकाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दरस वखाए इक्क इकाती, काया मन्दर अंदर सोभा पाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सदा सुहेला बणे कमलापाती पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, इक्क ध्यान लगाईआ। दरगाह साची देवे थाउँ,

लक्ख चुरासी ना कोई भवाईआ। सच अदालत करे हक़ न्याउँ, दरगाह साची देवे माण वडयाईआ। बिन हत्थां पकड़े बाहों, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। घर वखाए निहचल अट्टल अथाहो, बेपरवाह बेपवराहीआ। जिथ्थे ना कोई पिता ना कोई माउँ, साक सज्जण सैण नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक्क सरनाईआ।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, चरन कँवल मिले सरनाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, धरत धवल उपर सोभा पाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उल्टा कर नाभ कँवल, अमृत रस विच्च टपकाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म जावे मवल, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, हरि मेला मेले गहर गम्भीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शांत करे सरीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अमृत जल देवे ठांडा नीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मुख लगाए धुर दरगाही आपणा सीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अकाला बदल देवे तकदीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, माण वड्डिआई देवे नाल कबीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, एका रंग रंगाए शाह फ़कीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण लक्ख चुरासी जम की फ़ासी कट्टे भीड़। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, हउमे हंगता कढ्ढे पीड़। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शरअ कट्टे ज़ंजीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, साची मंज़ल चोटी चढ़े अख़ीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेल मिलावा धुरदरगाही पीरन पीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेला मिले बेनज़ीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कोह ना सके खड़ग खण्डा शमशीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची धीर।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले मातलोक वडयाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अन्तर आत्म वजदी रहे वधाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सुरत शब्द होवे कुड़माईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अगली मंज़ल पैंडा दए चुकाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अकाल होवे सहाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दीन दयाल दया कमाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नाउँ निरँकारा इक्क दृढ़ाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, महल्ल अट्टल काया काअबे होवे रुशनाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लहणा देणा चुकाए जल थल, समुंद सागर पार कराईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लेखा रहे ना घड़ी पल, पूरब लहणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप दीपक हो के गृह गृह जाए बल, बलदी अगन विच्चों गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत बाहर कढ्ढाईआ। (१५ सावण श सं २ जागीर सिँघ)

* * * * * * * * * * * * * *
* * * * * * * * * * * * * *

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, उत्तम होवे सृष्टी जग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले मेल सूरा सर्बग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, देवे दरस उपर शाह रग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जन्म कर्म दी मेटे अग्ग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, काया काअबे करावे सच्चा हज। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मोह विकार अंदरों जाए भज्ज। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द अगम्मी वज्जे नाद अनहद। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, निझर धार अमृत मिले रस। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, निरगुण जोत होवे प्रकाश। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दरगाह साची बणे दासी दास। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले मेल पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे देवे सच निवास।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पाए परम पुरख पारब्रह्म। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच जणाए इक्को धर्म। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, झगड़ा रहे ना माटी चर्म। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच सरनाई देवे इक्को सरन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण चुकाए डरन मरन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नेत्र खुले हरन फरन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, बिन अक्खरां ढोले गीत अगम्मी पढ़न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, काया माटी मंज़ल आपणी चढ़न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच दवारे अंदर निरगुण दर्शन करन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आवे फड़न।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, निउँ निउँ लागे पाउँ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अबिनाशी पकड़े बाहों। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दरगाह साची देवे थाउँ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेला मिले अगम्म अथाहो। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा एका सोभा पाउँ।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दीपक जगे घट अन्तर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शब्द नाद सुणाए गुर मंत्र। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पड़दा चुक्के ब्रह्म निरंतर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले वड्डिआई विच्च साध सन्तन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नाता जोड़े परमात्म नार कन्तन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लहणा देणा चुक्के काया माटी नव तन। जो जन सिमरन हरि का नाउँ, मेहरवान वासना बदले जगत मन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, भाण्डा भरम भउ देवे भन्न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आपणा राग सुणावे कन्न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच दवार वखाए बिन छप्पर छन्न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, गुरमुख गुरसिख सतिगुर चढ़ाए दरगाह साची चन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भंडारा भगतां देवे आपणा नाम धन। (१५ सावण श सं २ माई ईशर कौर)

* * * * * * * * * * * * * *

* १५ सावण शहनशाही सम्मत २ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड गगोबूआ *

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मन बुद्धि चुक्के सोच। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, झगड़ा रहे ना वरन गोत। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कूड़ी क्रिया रहे ना खोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सतिगुर आलूणउँ डिग्गे उठावे बोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, भाग लग्गे साढ्ढे तिन्न हत्थ काया माटी कोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सतिगुर शब्द लगाए अगम्मी चोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, गृह प्रकाश जगावे निर्मल जोत। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पैंडा मुक्के चौदां लोक। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आत्म परमात्म गावे इक्क सलोक। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, चिन्ता रहे ना हरख दोख। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अकाल बख्शे एका ओट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम भंडारा बहुत।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मन बुद्धि ना कोई विचार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर मन्दर होवे उजिआर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर ठाकर प्रीतम करे ५ यार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अमृत रस मिले ठंडा ठार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लेखा चुक्के कूड़ नौं दवार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर ठांडे मिले कन्त भतार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, माया ममता मोह देवे निवार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले मेल पुरख पुरखोतम अकाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कूड़ी क्रिया तोड़े जगत जंज़ाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लक्ख चुरासी विच्चों लए भाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, फड़ बाहों उठाए गुरमुख लाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दिवस रैण करे प्रितपाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर ठांडा वखाए सच्ची धर्मसाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेल मिलाए आप किरपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले कर कर मेले सदा सदा सद रक्खे आपणे नाल। (१५ सावण श सं २ चन्नण सिँघ दे गृह)

* * * * * * * * * * * * * *

* १५ सावण शहनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड नूरपूर *

जो जन जपे हरि का नाउँ, सो पुरख निरञ्जण दया कमाईआ। शब्दी धार पकड़े बाहों, हरि पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। सच दवार वस्से थाउँ, एकँकार अकल कल आप वरताईआ। दो जहानां करे सच न्याउँ, नर निरँकार आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जन भगतां अंदर देवे साचा चाओ, अबिनाशी करता मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला दो जहानां बख्शे ठंडी छाउँ, अबिनाशी करता आपणे हत्थ रखवाईआ। सच दवार सचखण्ड दरगाह साची वस्से बेपरवाहो, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि देणा वर, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप बंधाईआ।

जो जन जपे एका नर निरँकार, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। शब्दी शब्द दे अधार, जोती जाता बेपरवाहीआ। चारे खाणी विच्चों करे बाहर, अंडज़ जेरज उत्भुज सेतज वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भे गुरमुख आपणा लाल, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। धर्म वखाए धुर निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ ज़िमी असमानां श्री भगवाना आप झुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म देवे इक्क ज्ञान, जगत अक्खवर करे ना कोई पढ़ाईआ। चरन कँवल उपर धवल देवे माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जो जन जपे हरि का नाउँ, सतिजुग साचे सच दए वडयाईआ। हँस बुद्धि फड़ के बणाए काउँ, सोहँ हँसा आपणा जाप जपाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां निरगुण बणे पिता माउँ, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी शब्द अनादी बोध अगाधी आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म देवे धुर फ़रमाण, नाम नगारा इक्क जणाईआ। जिस नूं समझे ना बुद्धि जीव इन्सान, अक्खरां विच्च वंड ना कोई वंडाईआ। निरअक्खर शब्दी धार चलाए श्री भगवान, भगत संदेशा इक्को इक्क दृढ़ाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर दे के गए ब्यान, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंज़ील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर होवे जाणी जाण, चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दह दिशा बच्या कोई रहण ना पाईआ। सर्ब दा मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, परवरदिगार सांझा यार जलवागर वाहिद लाशरीक इक्को नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव अभेदा खोल्हे मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच्च आपणा नाम दृढ़ाईआ।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, धुर दवारा दए वखाईआ। जिथ्थे वसे बेपरवाहो, दूजा नज़र कोई ना आईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी सचखण्ड दवारे हकीकत वाला करे हक़ न्याउँ अदल अदालत शाह हकीर इक्को इक्क वखाईआ। सच भंडारा धुर दा कलमा नाम नयामत, निरगुण सरगुण झोली दए भराईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त सदा रहे सही सलामत, साहिब सुल्तान शाह पातशाह इक्को इक्क अखवाईआ। जो कलिजुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान महिबूब हो के कूड़ी क्रिया मेटे बगावत, मानुख मानव मानस अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। सच प्रीती धुर दी रीती करे आप सखावत, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। माया ममता मोह कूड़ मिटाए लालच, हँकार विकार विभचार अंदरों दए कढ्ढाईआ। सतिजुग कलिजुग अंदरों दोहां दा बणे सालस, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ी क्रिया करे पार जहालत, सति धर्म सति सतिवादी आपणा इक्क प्रगटाईआ।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ निरँकारा, निरवैर निरगुण दया कमाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, पड़दा उहला दए चुकाईआ। साचा देवे इक्क जैकारा, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़

तेतीसा गुर अवतार पैगम्बर जिस नूं गा के शुकर मनाईआ। सचखण्ड दवारा दर दरवेश निउँ निउँ करन निमस्कारा सजद्यां विच्च बरदे बण के धूढ़ी खाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हत्थ रखाईआ।

जो जन जपे नर निरँकार नाउँ अगम्म अथाह, हरि वड्डा वड्डी वडयाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण फेरा पा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रोवे मारे धाह, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। वड अमाम फेरा पा, सही सलामत तेरी ओट तकाईआ। खुदी तक्ब्बर उम्मत उम्मती गिआ समा, हकीकी जाम आबेहयात प्याला मुख ना कोई लगाईआ। कदम कदम ते करन गुनाह, रूह बुत्त पवित ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा सुणाईआ।

धुर दा हुक्म दे फ़रमाण, सच धर्म मंग मंगाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे निशान, वरन बरन रहण कोई ना पाईआ। हिंदू मुसलम सिख ईसाई इक्को ढोला तेरा गाण, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक हर घट वसें राम काहन हो के लक्ख चुरासी गोपी रिहा परनाईआ। गुर सतिगुर हो के देवें शब्दी ज्ञान, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। भाग लगावें काया माटी साढ़े तिन्न हत्थ मकान, मन्दर शिवदवाला मठ्ठ इक्को घर देणा वखाईआ। जिस गृह निझ आत्म परमात्म वसें श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद ठांडे दर इक्को मंग मंगाईआ।

जो जन जपे हरि का नाउँ एक, एकँकारा दए मात वडयाईआ। चरन धूढ़ी देवे टेक, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। बुद्धि करे बिबेक, मन वासना ना कोई हलकाईआ। सुरती करे चेतन्न चेत, शब्दी शब्द लए जगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साचा हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सचखण्ड साचा देस, जिस गृह आपणा हुक्म वरताईआ।

सचखण्ड वस्से करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ । जिथ्थे सन्त सुहेले भगत गुर अवतार, बैठे सीस निवाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव खड़े भिखार, खाली झोली अग्गे डाहीआ। इक्को जोत होवे उजिआर, दीवा बाती ना कोई रखाईआ। इक्को नाम होवे जैकार, बिन रसना जेहवा ढोला रिहा सुणाईआ। इक्को दस्से साचा घर बाहर, जिस दी छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। जिथ्थे सूरज चन्न करे ना कोई पसार, मण्डल मंडप नज़र कोई ना आईआ। कागद कलम शाही लिखे ना कोई लिखार, खाणी बाणी रूप ना कोई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप खुल्ह़ाईआ।

भेव अभेदा खोल्हे श्री भगवन्त, पारब्रह्म आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। पड़दा लाहे गुरमुख साचे सन्त, सोई सुरती आप उठाईआ। आत्म परमात्म मेला मेल के नार कन्त, सेज सुहञ्जणी दए सुहाईआ। इक्को नाम मणीआं मंत, मन वासना कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निवण सु अक्खर बिन अक्खरां आप वखाईआ । झगड़ा मुका के बहश्त जन्नत, जन भगतां चरन कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत मेला होणा अन्त, अन्तश्करन दा लेखा रहे ना राईआ। इक्को रूप होणा भगत भगवन्त, सचखण्ड साचे मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि अन्त मध, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। (१५ सावण श स २ दलीप सिँघ )

* * * * * * * * * * * * * *

* १५ सावण शहनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भोजीआं *

हरि संगत दीरघ रोग जाए दरभ, दुक्ख दर्द रहण ना पाईआ। देवे वड्डिआई मालक सर्ब, साहिब सुल्तान सच्चा शहनशाहीआ। मेल मिलाए विच्चों अरब खरब, कोटन कोटां विच्चों पार लँघाईआ। तपणा पए ना मात गरभ, दस दस मास अगन ना कोई तपाईआ। कूड़ी क्रिया लावे ख़रब, जगत चोट ना कोई वखाईआ। पुट्ठी कदे ना होवे नरद, मानस जन्म ना कोई गवाईआ। कर किरपा प्रभ जिन्हां भगतां दी सुणे अर्ज़, अर्श कुर्श लेखा दहे मुकाईआ। आपणी सांझी रक्ख के गर्ज़, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। शरअ कट्टे ना कोई करद, कतलगाह ना कोई वखाईआ। मनुआ मन करे फ़रक, विशा विकार ना कोई रुड़ाईआ। साची जणाए शब्द तर्ज़, नाम निधाना आप उपजाईआ। वखाए खेल हरि असचरज, अचरज लीला दए जणाईआ। दया करे मरदाना मरद, मदद आपणी इक्क समझाईआ। हरि सिमरत दुक्ख रोग ना विआपे, विआपक हो के वेख वखाईआ। सगल वसूरे वेख सन्तापे, सत असत पड़दा दए उठाईआ। निझ नेत्र खुल्हे आखे, अक्ख प्रतक्ख मिले गुसाईंआ। सतिगुर शब्द सुणे साके, जगत विद्या लोड़ रहे ना राईआ । सुरती शब्द वेखे तमाशे, बाजीगर डंक ना कोई वजाईआ। साचा करे भोग बिलासे, आत्म परमात्म मिल के धुर संजोग जोड़ जुड़ाईआ। सच दवार होवे वासे, निवास असथान इक्को दरसाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत प्रकासे, पुरख अकाल सोभा पाईआ। भगत भगतार इक्क दूजे दी पूरी होवे आसे, निराशे रहण कोई ना पाईआ। बिन रसना जेहवा शब्दी बचन होण खुलासे, अनबोलत बोलत आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे के इक्क भरवासे, भावना आपणे नाल रखाईआ।

हरि का नाऊँ जो सिमरे सच धार, धरनी धरत धवल मिले वडयाईआ। पढ़ने पैण ना वेद चार, चार कुण्ट ना भज्जे वाहो दाहीआ। शास्त्र सिमरत फोलणे पैण ना विच्च संसार, वरका वरका ना कोई उलटाईआ। गीता ज्ञान ना करना पए विचार, अठ्ठ दस्स पुच्छण कोई ना पाईआ। अञ्जील कुरानां शब्द दस्से ना कोई मीआं यार, मुहब्बत इके नाल

लगाईआ। कलमा हक़ करे उजिआर, नौबत हक़ हक़ ना कोई वजाईआ। सति सति करना ना पए जैकार, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोई हलाईआ। जिन्नां अन्तर आत्म परम पुरख मिल्या आण, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भाग लगा के कायां माटी सच मकान, मक्का काअबा अंदरों दए वखाईआ । नाम संदेसा दे के धुर फ़रमाण, धर्म दवारा दए समझाईआ। जन भगतां बख्श के इक्क ध्यान, सरन देवे चरन कँवल सरनाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां बखशे माण, सचखण्ड निवासी दरगाह साची दर घर साचे दए वडयाईआ। जिथ्थे दीवा बाती कमलापाती जगाए आण, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां सहज सुभाओ मिल्या आण, खोजण दी लोड़ किसे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे दर तों आपणा देवे आप दान, भगती वाली भावना भय विच्च पूर कराईआ। (१५ सावण श स २ करतार सिँघ)

* * * * * * * * * * * * *

* १५ सावण श सम्मत २ प्रताप कौर दे गृह पिण्ड भोजीआं *

हरि सिमरत उपजे साचा धर्म, सच दवारा नज़री आईआ। जूठा झूठा मिटे भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भाग लग्गे काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। लेखे लग्गे मानस जन्म, जन्म मरन दा पैंडा दए चुकाईआ। निहकर्मी आपणा पूरा करे कर्म, कांडां दा लेखा दए गवाईआ। झगड़ा रहे ना वरन बरन, जात पात वंड ना कोई वंडाईआ। पुरख अकाल देवे साची सरन, भगत वछल हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र नाम समझाईआ।

हरि सिमरत हउमे जाए रोग, जगत सन्ताप ना कोई सताईआ। शब्द प्रीती मिले जोग, जुगत पुरख अकाल दए समझाईआ। भाग लग्गे काया माटी कोट, बंक दवारा सोभा पाईआ। नाम अगम्मी लाए चोट, सोई सुरती शब्द जगाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। सच सुणाऐ नाम सलोक, सोहला इक्को इक्क उपजाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक डेरा ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्क वखाईआ।

हरि सिमरत सर्ब दूख विनास, अबिनाशी करता दया कमाईआ। वस्त अमोलक देवे रास, नाम निधाना झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया करे फाश, माया ममता मोह मिटाईआ। चरन प्रीती दे के दात, दातार हो के वेख वखाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चमकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के धुर दी गाथ, साचा ढोला दए पढ़ाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ा के घाट, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला एकँकारा सदा होवे साथ, दो जहानां संग निभाईआ। सचखण्ड दवारे करे निवास, भूमिका इक्को इक्क वखाईआ। जिथ्थे दीपक जोत होवे प्रकाश, अबिनाशी करता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

हरि सिमरत मिले शब्द गुण निधान, गुणवन्ता झोली पाईआ। साचा दिसे धर्म निशान, दो जहानां इक्क लहराईआ। सुहाए इक्को बंक मकान, बेपरवाह आपणा भेव खुलाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर मंगण दान, विष्न ब्रह्मा शिव झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, सच दवारा इक्क प्रगटाईआ।

हरि सिमरत वेखे हरि का दवार, हरि हरि विच्च समाईआ। झगड़ा रहे ना कोई विभचार, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। लक्ख चुरासी उतरे पार, जम की फासी लए कटाईआ। साची दासी बण के सेवादार, सेवक हो के निऊँ निउँ सीस झुकाईआ। महल्ल अट्टल उच्च मनार, दर घर साचे चढ़ के दर्शन पाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, महांकाल ना कोई वडयाईआ। सच दवार इक्को धर्मसाल, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। त्रैगुण माया दिसे ना कोई जंज़ाल, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। जन भगतां सन्तां अंदर सुत्ता दिसे सदा नाल, विछोड़ा रहण कदे ना पाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी लेखे लावे कीती घाल, जो घायल हो के आपणा आप गए मिटाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख सज्जण लभ्भे लाल, माणक मोती हीरे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे देवे माण, जिस घर वसे श्री भगवान, दूजा नज़र कोई ना आईआ। (१५ सावण श सं २ परताप कौर)

हरि का नाम हरि जन जानी। वेला अन्त ना फेर पछतानी। हरि का नाम भुल्ले ना परानी। हरि का नाम दर घर साचे की साची रानी। हरि का नाम गुरमुख तेरी आत्म बानी। हरि का नाम दिवस रैण रैण दिवस सद रसन वखानी। हरि का नाम एका रंग रंगानी। हरि का नाम संग निभाए वाली दो जहानी। हरि का नाम हरि आप जपाए बण के साचा बानी। हरि का नाम अन्त चुकाए जम की कानी। हरि का नाम अन्तकाल हो जाए डानी । हरि का नाम कलिजुग मिटाए झूठी जगत निशानी। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द देवे दानी।

हरि का नाम हरि जगदीशर। हरि का नाम मिलाए ईशर। हरि का नाम कोटन कोट गायण पतीशर। हरि का नाम रिदे समाइण, सुन समाधी लाइण वड मुनीशर। हरि का नाम एका मेल मिलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिले इक्क जगदीशर।

इक जगदीश राखो चित्त। हरि का नाम देवे साचा मित्त। हरि का नाम साचा हित्त। हरि का नाम साचा पित्त। हरि का नाम रसना जप मानस जाए कल जित्त। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां बणया साचा पित्त।

हरि का नाम सच सुनेहुड़ा। हरि का नाम आप कटाए जम का जेवड़ा। हरि का नाम गुरमुख तेरा तन बणाए नगर खेड़ा। हरि का नाम आप कटाए तेरा लक्ख चुरासी गेड़ा। हरि का नाम आप कटाए आवण जावण झूठा जगत झेड़ा। हरि का नाम वेले अन्त करे नबेड़ा। हरि का नाम गुरमुखां बंध वखाए बेड़ा। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सोहँ साचा बेड़ा।

हरि का नाम हरि की रीती। हरि का नाम हरि की प्रीती। हरि का नाम परखे नीष्ती। हरि का नाम काया करे पतित पुनीती। हरि का नाम रसना जप, होए सीतल सीती। हरि का नाम रसना जप, जीव औध हत्थ ना आए बीती। हरि का नाम रसना लाओ, मदि साची ना उतरे पीती। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म जाओ जग जीता।

हरि का नाम साची मत्त। हरि का नाम आत्म जत्त। हरि का नाम साचा तत्त। हरि का नाम आपे दे समझाए मत। हरि का नाम आपे पाड़े काया कोठी झूठी छत्त। हरि का नाम आत्म साचा बीज बिजाए साचे वत्त। हरि का नाम प्रगट होए, मेल मिलाए प्रभ अबिनाशी साचे पति। हरि का नाम आत्म साची जोत जगाए, एका राह दिसाए सति। हरि का नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा एका सति।

हरि का नाम हरि की चाल। हरि का नाम हरि निभे नाल। हरि का नाम गुरमुख साचे साची वस्त संभाल। हरि का नाम अन्तम अन्त होए रखवाल। हरि का नाम पल्ले बन्नृ ना होए जीवण कंगाल। हरि का नाम हरि हरि देवे सच्चा धन माल। हरि का नाम आत्म दीपक जोती देवे बाल। हरि का नाम माणक मोती रक्खणा गुरसिख संभाल। (६ जेठ २०१० बि)

* * * * * * * * * * *

* ७ माघ २०१८ बि सुरजण सिँघ दे घर मांगा सराए *

हरि हरि नाउँ साचा रंग, सच सच वडयाईआ। हरि हरि नाउँ अमृत गंग, गहर गम्भीर जणाईआ। हरि का नाउँ आत्म सेज पलँघ, आसण सिँघासण दए वडयाईआ। हरि का नाउँ अगम्मी मरदंग, मर्द मरदाना आप वजाईआ। हरि का नाउँ सूरा सर्बंग, आदि जुगादि समाईआ। हरि का नाउँ इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च वखाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख छन्द, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। हरि का नाउँ सदा बख्शंद, हरिजन साचे लए तराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप सालाहीआ।

हरि का नाउँ सूरबीर, बीर बली बलवान। हरि का नाउँ सच्चा पीर, पीर पैगम्बर शाह सुलतान। हरि का नाउँ बेनज़ीर, नज़र ना आए विच्च जहान। हरि का नाउँ तेज

शमशीर, तिक्खी धार खेल महान। हरि का नाउँ आदि अन्त अख़ीर, मध खेल श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम रक्खे दान।

हरि का नाउँ सच दाना, दाता दानी आप वरताइंदा। हरि का नाउँ प्रभ चरन ध्याना, चरन कँवल चित लाइंदा। हरि का नाउँ सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। हरि का नाउँ वसे सच मकाना, साचे मन्दर सोभा पाइंदा। हरि का नाउँ ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। गुरमुख विरला पाए चतुर सुघड़ सिआणा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाइंदा।

हरि का नाउँ डूंघा सागर, हरि हरि आप उपाईआ। हरि का नाउँ काया गागर, पंज तत्त हरि छुपाईआ। हरि का नाउँ गुरमुख विरला बणे सौदागर, जिस जन दया कमाईआ। हरि का नाउँ निर्मल कर्म करे उजागर, उजल मुख वडयाईआ। हरि का नाउँ दो जहान देवे आदर, एथ्थे ओथ्थे होए सहाईआ। मेल मिलाए करीम कादर, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सिफ्त सालाहीआ।

हरि का नाम सच सलाह, सिख्या साची सच जणाइंदा। हरि का नाम इक्को राह, जुगा जुगन्तर मात चलाइंदा। हरि का नाउँ पकड़े बांह, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। हरि का नाउँ हँस बणाए कां, कागों हँस उडाइंदा। हरि का नाउँ निथाविआं देवे थां, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराइंदा।

हरि का नाउँ हरि का जस, हरि हरि वड्डी वडयाईआ। गुरमुख विरला लेवे हस्स हस्स, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी हिरदे वस वस, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। जगत मिलावा हस्स हस्स, भगत सुहावा थान वडयाईआ। जगत जुग जन्म दी पूरी आस, शाहो शाबाश आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्द ख़लासी बन्द तुड़ाईआ।

हरि का नाउँ पूरन गुर, गुरू गुर वड्डी वडयाईआ। हरि का नाउँ संदेशा धुर, धुर दी धार धार प्रगटाईआ। हरि का नाउँ अनादी सुर, तार सतार ना कोई हलाईआ। हरि का नाउँ जगत तृष्ना मिटाए औड़, अमृत मेघ बरसाईआ। हरि का नाउँ मिठा करे रीठा कौड़, विख अमृत रूप धराईआ। हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वरताईआ।

हरि का नाउँ सदा सद मिट्ठा, रसना रस ना कोई वखाईआ। हरि का नाउँ, सद अनडिठा, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। हरि का नाउँ हरि भगत वंडाइण हिस्सा, जुग जुग आपणी झोली डाहीआ। हरि का नाउँ खाणी बाणी गाए किस्सा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ।

हरि का नाउँ हरिजन पूरी करे इच्छा, गुर सतिगुर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नामे माण दवाईआ।

हरि का नाउँ ऊँच अपारा, हरि हरि आप उपाइंदा। हरि का नाउँ सच विहारा, सति सतिवादी साची कार कमाइंदा। हरि का नाउँ जुग जुग उजिआरा, लोकमात डंक वजाइंदा। हरि का नाउँ गुर अवतार सहारा, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। हरि का नाउँ भगत भंडारा, श्री भगवान आप वरताइंदा। हरि का नाउँ सन्त सहारा, सांतक सति सति कराइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख वणजारा, घर घर विच्च हट्ट खुल्हाइंदा। हरि का नाउँ गुरसिख उधारा, जन्म जन्म दी मैल धवाइंदा। देवणहारा एकँकारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम हट्ट इक्क जणाइंदा।

हरि का नाम इक्को हट्ट, आदि जुगादि वरताईआ। गुरमुख लाहा लैण खट्ट, दूसर हत्थ किसे ना आईआ। वसणहारा घट घट, बैठा मुख भुआईआ। रसना जिह्वा लक्ख चुरासी जीव जंत अक्खर नाम रहे रट, निशअक्खर करे ना कोई पढ़ाईआ। डूंघे खाते हरि जू दिता सट्ट, नज़र किसे ना आईआ। पंडत पांधे पढ़ पढ़ गए थक्क, नेत्र पेख पेख कलम छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सिफ्त सालाहीआ। हरि का नाउँ डूंघी गार, घर घर आप वसाया।

लक्ख चुरासी होई ख़वार, हत्थ किसे ना आया। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। जगत विद्या ना पावे सार, अनभव भेव ना कोई जणाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार आप कराया। जुग जुग प्रगट हो विच्च संसार, हरिजन साचे लए उठाया। एका बख्शे नाम आधार, आत्म परमात्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप प्रगटाया।

साचा नाम गुर चरन प्रीत, सतिगुर दया कमाईआ। लहणा देणा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वडयाईआ। माणस जन्म लए जीत, चितवित ठगोरी कोई ना पाईआ। काईआ होए पतित पुनीत, पतित पावण दया कमाईआ। त्रैगुण अगनी ठांडी सीत, सांतक सति कराईआ। पंचम वसे हरि जू चीत, चेतन्न रंग वखाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए गीत, ध्यान ध्यान विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाईआ।

साचा नाम आत्म रस, बिन रसना आप जणाइंदा। जिस दे हिरदे जाए वस, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाइंदा। पंच विकारा देवे झस, ममता मोह मिटाइंदा । मेल मिलावा पुरख समरथ, घर घर विच्च जोड़ जुड़ाइंदा। आप चढ़ाए आपणे रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। नाता तोड़ साढ़े तिन्न हत्थ, महिमा अकथ्थ आप जणाइंदा। आपणा नाम आपे दस्स, गुरमुख साचे आप पढ़ाइंदा। पिच्छों लोकाई

गाए जस, काग़ज़ पत्र सिफ्त सालाहिंदा। छाही पन्ध मुकाए नस्स नस्स, हुक्मी हुक्मी आप फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ जुग जुग, जन भगतां आप वरताइंदा।

आपणा नाम आपणी धार, आपणे विच्च समाईआ। सो पुरख निरञ्जण खेल अपार, हरि पुरख निरञ्जण रिहा सालाहीआ। एकँकार करनेहार, करता पुरख वड्डी वडयाईआ। आदि निरञ्जण दरस दीदार, जोत उजाला नूर कराईआ। अबिनाशी करता हो त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता त्रैभवन धनी आपणा रूप वटाईआ। श्री भगवान सच निशान हो मेहरवान, दो जहान आप झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधान, इक्क सुणाए धुर फ़रमाण, सच संदेशा नर नरेशा आपणा नाउँ आप जणाईआ। किसे हत्थ ना आए ब्रह्मा विष्न महेशा, कोटन कोट बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्को वर, अन्तर मंत्र आपणे नाम करे पढ़ाईआ।

जिस नाम नूं लभ्भे जग, सो हत्थ किसे ना आइंदा। चार कुण्ट दह दिशा रहे भज्ज, टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। ताल तलवाड़े रहे वज्ज, ताल ताल ना कोई मिलाइंदा। पुरख अबिनाशी आपणा नाउँ सभ तों रक्खया अड्ड, काया हड्ड आप छुपाइंदा। हरिजन साचे हरि जू सद, नित सदड़ा आप सुणाइंदा। जिस दी पार ना कीती किसे हद्द, सो गुरमुखां हद्द अंदर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम गाए छन्द, बन्द सभ दे आप कटाइंदा।

हरि का नाउँ बोध अगाध, भेव अभेद रखाइंदा। हरि का नाउँ हरि की दाद, हरि साचा आप वरताइंदा। हरि का नाउँ गुरमुख विरला लेवे साध, साची साधना जिस कराइंदा। हरि का नाउँ इक्क एका आदि, जुगादि हरि हरि वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप प्रगटाइंदा।

आदि प्रगटाया हरि हरि नाउँ, हरि नामे वज्जी वधाईआ। थिर घर वस्सया साचे थाउँ, गृह मन्दर सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी करदा आया सच न्याउँ, कोटन कोट काल बिताईआ। गुर अवतार फड़ फड़ बाहों, साची सेवा गिआ लगाईआ। अन्तम करे सच न्याउँ, निराकार सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाउँ धराईआ ।

एका आपणा नाउँ रक्ख, निरगुण दया कमाइंदा। सति सरूपी हो प्रतक्ख, जोती जाता डगमगाइंदा। सो पुरख निरञ्जण हँ ब्रह्म करे पक्ख, सोहँ आपणा रंग रंगाइंदा। एका मंत्र मात दस्स, बिध अन्तर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाउँ सोहँ धार, सति सति आप प्रगटाईआ। हँ ब्रह्म कर प्यार, आत्म परमात्म रंग वखाईआ। बण विचोला एकँकार, साचा ढोला आपे गाईआ।

पर्दा उहला विच्च संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप जणाईआ।

साचा नाउँ आप प्रगटा, प्रगट आपणी खेल कराइंदा। दो जहानां आप धरा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रहे गा, दिवस रैण ध्यान लगाइंदा। करोड़ ततीसा मन्न रज़ा, सुरप्त राजा इन्द चरन कँवल ध्यान रखाइंदा। करे खेल बेपरवाह, आपणा नाउँ आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ आप धराइंदा।

साचा नाउँ धरनी धर, लोकमात दए वडयाईआ। हरिजन विरले आपे वर, घर साचे मेल मिलाईआ। बोध अगाधी अक्खर पढ़, दोए दोए अक्खर आप पढ़ाईआ। आत्म परमात्म पल्लू फड़, घर साचे खुशी मनाईआ। गृह गृह चोटी आपे चढ़, साचा मन्दर आप सुहाईआ। आपणी बाणी आपे पढ़, पढ़ पढ़ रिहा सुणाईआ। निरगुण सरगुण घाड़न घड़, घट घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप जणाईआ।

एका नाउँ सोहँ सो, सो पुरख निरजंण आप प्रगटाइंदा। जन्म जन्म दी दुरमत धो, पत्तित पापी पार कराइंदा। दरस दिखाए अग्गे हो, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। निझर झिरना अमृत चो, अमृत रस चखाइंदा। जोत नुरानी कर कर लो, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क वड्डयाइंदा।

साचा नाम वड्डा वड, हरि जू आप बणाया। आपणे विच्चों आपा कढ़ु, सोहँ रूप प्रगटाया। निरगुण सरगुण आपे सद्द, आपणे कोल बहाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्म आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपजाया।

उपजया नाउँ हरि गोबिन्द, घर घर वज्जे वधाईआ। हरिजन मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा नज़र ना आईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर दया कमाईआ। अमृत देवे सागर सिंध, सच प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम घर घर आख सुणाईआ।

घर घर अंदर उठे धार, जिस जन बूझ बुझाइंदा। वेख ना सके कोई संसार, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। रातीं सुत्यां दए दीदार, दीनन आपणी दया कमाइंदा। ग़फ़लत खोल्ह होया बेदार, बेदर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वरताइंदा।

साचा नाम झोली पा, झूला इक्क झुलाईआ। जन्म जन्म दा मूल चुका, लहणा दए मुकाईआ। शंकर त्रिसूल रिहा सुटा, भोला नाथ दए जगाईआ। ब्रह्मा नेत्र नीर रिहा वहा,

चारे मुख रिहा कुरलाईआ। विष्नूं भंडारा लिआ लुटा, ख़ाली हत्थ फिरे वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी ओट तका, भगवन होणा अन्त सहाईआ। जुग चौकड़ी तेरी सेवा लई कमा, लक्ख चुरासी खेल खलाईआ। कलिजुग वेला अन्तम गिआ आ, तेरी पनाह तेरी इक्क शरनाईआ। जीव जंत करन गुनाह, पाक नज़र कोई ना आईआ। अन्तम होणा सर्ब फनाह, बिस्मिल रूप ना कोई वखाईआ। हरि का नाउँ गए भुला, दीन मज़हब वंड वंडाईआ । हिरदे राम ना सके कोई वसा, राम राम रसना रहे गाईआ । अन्तम देणा पन्ध मुका, पान्धी बण बण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए शरनाईआ।

पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। उठो वेखो करो ध्यान, नेत्र नैण खुल्हाइंदा। लोकमात बण प्रधान, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। निहकलंक बली बलवान, जोती जामा जोत जगाइंदा। शाहो भूप राज राजान, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। चार जुग दी मुके काण, पिछला लेखा ना कोई रखवाइंदा। अग्गे देवे धुर फ़रमाण, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। सत्तां दीपां एका गान, साचा मंत्र नाम दृढ़ांइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, सोहँ साची धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा।

साचा नाम आया मात, मनमत रहण ना पाईआ। कर किरपा देवे हरि जू दात, दाता दानी दया कमाईआ। पैहलों कीता आपणा घात, फेर गुरमुखां होए सहाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाता तोड़ ज़ात पात, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। इक्क सुणाए साची गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। (७ माघ २०१८ बि सुरजण सिँघ)

* * * * * * * * * * * * *
* * * * * * * * * * * * *

* ७ माघ २०१८ बि जगीर सिँघ दे गृह मैणीआं *

हरि का नाउँ साचा जाप, जुग जुग माण वडयाईआ। त्रैगुण मेटे तीनों ताप, जगत तृष्ना अगन बुझाईआ। कोटन कोट जन्म उतारे पाप, पत्तित पापी पार कराईआ। निरगुण सरगुण मेला सज्जण साक, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म साचा पाठ, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। अन्त उतारे पार घाट, मंजधार ना कोई रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बल आपणे नाउँ रखवाईआ।

हरि का नाउँ सदा परबल, पर्बत चोटी रही कुरलाईआ। हरि का नाउँ सदा अट्टल,

समुंद सागर देण दुहाईआ। हरि का खेल सदा अछल्ल, अछल अछल्ल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप सुणाईआ।

एका नाम सुणना कान, हरि काहन आप सुणाइंदा। एका नाम वसे सच मकान, काया बंक आप बणाइंदा। एका नाम मिले दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। एका नाम जाणी जाण, अन्तर आत्म भेव चुकाइंदा। एका नाम पीण खाण, आशा तृष्ना मोह मिटाइंदा। एका नाम नाद धुनकान, सारंग सारंगा ना कोई वजाइंदा। एका नाम बेपहिचाण, नज़र विच्च किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाम धराइंदा।

एका नाम छले बल बावन, रूप अनूप वटाईआ। एका नाम मारे रावण, लंका गढ़ तुड़ाईआ। एका नाम काहना होए ज़ामन, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका नाम ईसा मूसा दए पैग़ामन, पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। एका नाम निरगुण नानक बोले सति नामण, सति सति वज्जे वधाईआ। एका नाम फ़तह डंका दो जहानण, दोए दोए आपणा खेल कराईआ। एका नाम मूर्ख मूढ़ बणाए चतर सुघड़ सुजानण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आपणा नाम प्रगटाईआ।

एका नाम हरि की धार, हरि हरि आप उपाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपार, गुर अवतार वेख वखाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद विचार, लिख लिख लेख ना कोई मुकाइंदा। सिफ्ती सिफ्त सिफ्त संसार, सलाहण सलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप छुपाइंदा।

हरि का नाम बैठा छुप, नज़र किसे ना आइंदा। घर विच्च घर अन्धेरा घुप्प, दीपक दीआ ना कोई जगाइंदा। अठ्ठे पहर रहे चुप्प, सच अवाज ना कोई लगाइंदा। प्रभ अबिनाशी दा साचा सुत्त, आपणे रंग आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे पाइंदा।

हरि का नाम परदे अंदर, हरि साजण आप रखवाईआ। गृह गृह घट घट वेखे मन्दर, काया बंक वडयाईआ। आपे लाया इक्को जंदर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मन वासना फिरे बन्दर, मत मतवाली रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप छुपाईआ।

हरि का नाम वसे ओहले, भेव कोई ना पाइंदा। गुरमुख विरला पर्दा खोल्हे, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा । सोवत जागत गाए सोहले, एका राग अलाइंदा। अन्तर बोले हौले हौले, रसना जिह्वा ना कोई हलाइंदा । सरगुण अंदर निरगुण मौले, मौला आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप रखवाइंदा।

आपणा नाम आपे रक्खे, रक्खे रक्खे वेखे वखाईआ। सरगुण हो के कीता वक्खे, निरगुण भेव छुपाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए रक्खे, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, एका बूझ बुझाईआ। कलिजुग अन्तम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सन्त सुहेले आपे सद्द, इक्क सदा लगाईआ। आपे जाणे आपणी हद्द, पार किनारा ना कोई वडयाईआ। भाग लगाए डूंघी खड्ड, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जिस जन आपणा नाउँ सुणाए नैण शर्माए अनहद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप धराईआ।

हरि का नाउँ हरि की टेक, एका ओट जणाइंदा। हरि का नाउँ बुद्ध करे बबेक, ववेकी रूप वटाइंदा। हरि का नाउँ ना लाए सेक, अगनी तत्त बुझाइंदा। हरि का नाउँ मेटे रेख, पूरब लहणा झोली पाइंदा। हरि का नाउँ आदि जुगादी एका एक, जुग जुग वेस वटाइंदा। नव नौं चार वेस कीआ अनेक, अनक कल वरताइंदा। कलिजुग अन्तम वसे साचे देस, नगर खेड़ा दिस किसे ना आइंदा। साहिब सुल्तान नर नरेश, भूपत भूप आप सलाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप वरताइंदा ।

साचा नाउँ साची भिछा, भिखक आप वरताईआ। गुरमुखां करे साची रिछा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । अगला लेख आपे लिखा, पूरब दए चुकाईआ। सचखण्ड दा साचा हिस्सा, लोकमात धराईआ । रसना रस गिआ फिका, विख अमृत आप भराईआ। नेत्र लोचण नैण जिस जन दरस डिठा, अनडिठड़ी वस्त झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम आपणा आप वरताईआ। (७ माघ २०१८ बि जगीर सिँघ)

* * * * * * * * * * * * *
* * * * * * * * * * * * *